Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 4, October 2023; Pages 501 – 505
DOI: 10.5281/zenodo.10136758

Original Research Article

महात्मा गांधीजी का सत्याग्रह आंदोलन में योगदान

प्रा. डॉ. रामभाऊ देवराव काशीद

इतिहास विभाग, महिला महाविद्यालय अंबेजोगाई जि. बीड ४३१५१७ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: rambhaukashid696@gmail.com

Received: 15 October, 2023 | Accepted: 26 October, 2023 | Published: 27 October, 2023

प्रस्तावना

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ को गुजरात के तटीय शहर पोरबंदर की सुदामापुरी में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी ब्रिटिष शासन के अधीन काठियावाड़ एजेंसी की छोटी-सी रियासत पोरबंदर के दीवान थे। वे हिन्दू मोठ बनिया समुदाय से संबद्ध रखते थे। वे सच्चे, ईमानदार, साहसी और सिद्धांतों में विश्वास करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने कभी भी ज्यादा धन-संपदा एकत्र करने की महत्वकांक्षा नहीं थे। उनका परिवार छोटी-सी संपदा के आधार पर चलता था। गांधी के दादा का नाम उत्तमचंद गांधी था। गांधीजी की माता पुतली बाई थी और वह हिन्दू वैष्णव समुदाय की थी। वह करमचंद की चौथी पत्नी थी। धार्मिक स्वभाव की माता और क्षेत्र जैन धर्म ने मोहनदास को शुरुवाती जीवन में ही प्रभावित कर लिया और इस प्रभाव ने उनके पूरे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोध के उद्देश

१) महात्मा गांधीजी के सर्वोदय आंदोलन के योगदान स्पष्ठ करना ।
२) महात्मा गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन कार्या को उजागर करना ।

गांधीजी लंदन में धर्मवादियों के संपर्क में आए। उन्होंने गांधीजी को गीता के बारे में बताया। बाद के जीवन में गांधीजी प्रतिदिन गीता पढ़ने लगे। गीता गांधीजी के लिए "विष्व सृजन की कुंजी थी। उन्होंने गीता को अपनी माता, कामधेनु, पथ-प्रदर्षक और जीवन का स्रोत बताया है। उन्होंने बाईबिल पढ़ना षुरु किया और न्यू टेस्टामेंट, विषेषकर पर्वत पर उपदेष में गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने एडविन अर्नोल्ड की 'द लाइट ऑफ एषिया" पढ़ी और महात्मा बुद्ध के उपदेषों से प्रभावित हुए। गांधीजी ने अपने एक मित्र की सिफारिष पर कार्लाइले की "हीरोज एंड हीरो वारषिप" पुस्तक पढ़ी और पैगम्बर मोहम्मद के बारे में जाना । लंदन में बिताए गए तीन साल गांधीजी के लिए सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक रूप से परिपक्व होने का समय था। इस दौरान उन्होंने न केवल पैक्षिक रूप से अवसर का इस्तेमाल किया बल्कि बौद्धिक,

धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से प्रमाणित भी हुए। इसी समय उन्हें अपने परंपरागत नैतिक मूल्यों को आंकने का समय भी मिला । उनको इसी समय पहली बार यह अवसर मिला कि वे अपने जीवन को दिषा दे और अपनी प्राथमिकताएं और मूल्य तय करें।[1]

गांधीजी अप्रैल 1893 में दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हो गए। हालांकि उनका परिवार भारत में ही रह गया। दक्षिण अफ्रीका में उनका सामना नस्लवाद, भेदवाद, पूर्वग्रह और अन्य दमनात्मक वातावरण से हुआ। भारतीयों के साथ गुलामों और नौकरों की तरह व्यवहार किया जाता है। एक घटना ने गांधीजी का दिमाग और जीवन पूरी तरह से बदल दिया और वे खुलकर अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिए तैयार हो गए। वे डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे। रास्ते में उन्हें मार्टिजवर्ग रेलवे स्टेषन पर धक्के देकर उतार दिया गया। हालांकि उनके पास प्रथम श्रेणी का टिकट था। रेलगाड़ी अपने रास्ते पर बढ़ गयी और गांधीजी प्लेटफार्म पर अकेले रह गए। यह सर्दी का मौसम था और भयानक ठंड थी। पूरी रात उनकी आंखों में गुजर गयी। उन्होंने इस अन्याय और भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करने और इसका समूल नाष करने का निष्चय किया। वे अपनी वकालत के जरिए इसका विरोध करने लगे। [2]

दक्षिण अफ्रीका की घटनाओं ने गांधीजी को भारतीय समुदाय को एकत्र करने के लिए प्रेरित किया। एक जनसभा में उन्होंने भारतीयों से अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने और जाति, जन्म और धर्म से ऊपर उठने का कहा। उन्होंने भारतीयों का एक संगठन स्थापित करने पर जोर दिया जो उनके अधिकारों की देखरेख करें। उन्होंने इस संगठन को अपनी सेवा ओर समय मुफ्त में देने का प्रस्ताव किया। गांधीजी ने अब्दुल्ला एंड कंपनी के साथ अपना अनुबंध पूरा किया और इसके बाद बीस वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका में रहे। इस दौरान वे भारतीय समुदाय के अधिकारों के लिए सक्रियता से संघर्ष करते रहे। दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान गांधीजी के जीवन जीने के तरीके में जबरदस्त बदलाव आया। उनकी जीवनषैली साधारण से साधारण होती गयी। वे अपना घरेलू काम-काज स्वयं करने लगे। उन्होंने कपड़ों पर नाममात्र का खर्चा करना तय किया। उन्होंने अस्पतालों में स्वयंसेवक के तौर पर काम किया। वे लोगों के जीवन के प्रभावित करने वाले मुद्दे जैसे रंगभेद, गरीबी और असमानता का कड़ा विरोध करते थे।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया और जीत हासिल की। जॉन रस्किन की पुस्तक "अनटू दिस लास्ट" पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी जीवनषैली में बदलाव करने का फैसला। उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की और उसे फीनिक्स का नाम दिया। फीनिक्स डरबन में टालस्टाय फार्म के नजदीक स्थापित किया गया। जनवरी 1915 में गांधी भारत लौटे और वह वकील के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के एक अनुभव कार्यकर्ता के तौर पर आए थे। गांधीजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में परिचय गोपाल कृष्ण गोखले ने कराया। गांधीजी ने कांग्रेस के एक अधिवेषन में भारतीय मुद्द, राजनीति और भारतीयों को केन्द्र में रखकर भाषण किया। [3]

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद पहला साल गांधीजी पूरे देश के भ्रमण कर रहे। इस दौरान वे "बंद मुंह और खुले आंख कान से भारत को देखते समझते रहें । वर्ष 1917 में उन्होंने बिहार के चंपारण में अपना पहला सत्याग्रह आरंभ किया, जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई। इसके बाद अहमदाबाद में कपड़ा मिल में बोनस के मुद्दे पर हड़ताल हुई। यह हड़ताल 21 दिन चली और गांधीजी ने अपना पहला तीन दिन का उपवास रखा। यह उपवास भी सफल रहा। मिल मालिकों और मजदूरों में जल्दी समझौता हो गया। गांधीजी का अगला सत्याग्रह गुजरात के खेड़ा जिले में हुआ। फसलों के खराब होने के कारण किसान लगान के संबंध में कुछ रियायत चाहते थे। इस सत्याग्रह में राष्ट्रीय स्तर के कई नेताओं ने हिस्सा लिया और सरकार ने आकलन का काम निलंबित कर दिया। गांधीजी की लोकप्रियता बढ़ती रही। इस स्वतंत्रता के

आंदोलन में लोगों की सहभागिता बढ़ी । गांधीजी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया जिसमें समाज के सभी वर्गों ने हिस्सा लिया।[4]

गांधीजी और अन्य ने 11 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से डांडी के लिए 240 मील लम्बी पैदल यात्रा शुरू की। गांधीजी और उनके सहयोगियों ने 6 अप्रैल 1930 को डांडी में नमक कानून तोड़ा। भारत का कोई भी हिस्सा इससे अछूता नहीं रहा। उन्हें अपार जनसमर्थन मिला और पूरा राष्ट्र उनके साथ खड़ा हो गया। इस सत्याग्रह से स्वराज की नींव पड़ी और यह न केवल भारत से बल्कि पूरी दुनिया से ब्रिटिष राज के उन्मूलन की षुरूआत थी। मैं इस मनमानी के खिलाफ अधिकारों के संघर्ष में पूरे विष्व का समर्थन चाहता हूं। डांडी : 5 - अप्रैल, 19301 सरकार ने लार्ड एडवर्ड इर्विन के प्रतिनिधित्व में गांधीजी के साथ बातचीत करने का फैसला किया। इसके परिणामस्वरूप मार्च 1931 में गांधी इर्विन समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। ब्रिटिष सरकार ने सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा करने पर सहमति जताई। इसके बदले में नागरिक सविज्ञा आंदोलन स्थगित करना पड़ा। इस समझौते के परिणाम स्वरूप लंदन में गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया । इसमें गांधीजी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के तौर पर आमंत्रित किया गया। इस सम्मेलन से गांधीजी और अन्य राष्ट्रवादी निराष हुए क्योंकि यह मुख्य रूप से राजे-रजवाड़ों और अल्पसंख्यकों पर केन्द्रित रही । इसमें सत्ता हस्तांतरण पर अर्थपूर्ण बात नहीं हो सकी। [5]

वर्ष 1932 में सरकार ने नए संविधान के तहत अछूतों के लिए अलग निर्वाचन प्रणाली की व्यवस्था की। इसके विरोध में गांधीजी ने सितंबर 1932 में छह दिन का अनुषन किया । भारी जन दबाव में सरकार को पातावलंकर बालू की मध्यस्थता में बातचीत के जरिए समान निर्वाचन प्रणाली स्वीकार करनी पड़ी। इससे गांधीजी ने अछूतों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए नया आंदोलन शुरू किया गया। उन्होंने अछूतों को नया नाम "हरिजन- "ईष्वर की संतान- कहा। गांधीजी ने 8 मई 1933 को हरिजन आंदोलन की मदद के लिए आत्मबुद्धि के वास्ते 21 दिन का उपवास किया। गांधीजी ने दलितों के जीवन स्तर में - सुधार के लिए बहुत काम किए। वर्ष 1936 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेषन और नेहरू के अध्यक्ष बनने के बाद गांधीजी सक्रिय राजनीति में लौटे। गांधीजी अपना ध्यान पूरी तरह से स्वतंत्रता पर केन्द्रित करना चाहते थे और भारत के भविष्य के बारे में अटकलबाजी नहीं करते थे। उन्होंने कांग्रेस को समाजवाद का लक्ष्य हासिल करने का मकसद स्वीकार करने से नहीं रोका। सुभाष चंद्र बोस 1938 में कांग्रेस के अध्यक्ष बन गए। गांधीजी की आलोचना के बावजूद सुभाष को दुबारा कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने कांग्रेस में लागू किए सिद्धांतों को छोड़ना शुरु किया तो अखिल भारतीय नेताओं ने सामूहिक रूप से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद सुभाष चन्द्र बोस ने कांग्रेस छोड़ दी।

वर्ष 1939 में द्वितीय विष्व युद्ध शुरू हो गया। गांधीजी ब्रिटिष शासन को युद्ध में "अहिंसक नैतिक सहयोग देने के पक्ष में थे लेकिन कांग्रेस के अन्य नेता भारत को एकतरफा रूप से युद्ध में झोंक देने से नाराज थे। उनका कहना था कि ब्रिटिष शासन ने भारत को युद्ध में शामिल करने से पहले निर्वाचित प्रतिनिधियों से कोई सलाह मषविरा नहीं किया है। इसके विरोध में उन्होंने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया। स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में भारत छोड़ो आंदोलन सबसे सषक्त आंदोलन बना। इस दौरान बड़े पैमाने पर हिंसा हुई और गिरफ्तारियां की गयी। पुलिस की गोली से हजारों स्वतंत्रता सेनानी मारे गए या घायल हुए। लाखों लोग जेलों में ठूंस दिए गए। गांधीजी और उनके सहयोगियों ने यह साफ कर दिया कि भारत को आजादी मिलने तक युद्ध में अंग्रेजों का साथ नहीं दिया जाएगा। गांधीजी ने साफ कह दिया कि व्यक्तिगत हिंसा के कारण आंदोलन नहीं रोका जाएगा। उन्होंने कहा कि व्यवस्थागत अराजकता, वास्तविक अराजकता से

भी बुरी है। उन्होंने सभी कांग्रेस जनों और भारतीयों से अहिंसा के जरिए अनुषासन बनाए रखने की अपील की और "करो या मरो का मंत्र दिया।[6]

गांधीजी नियमित रूप से प्रार्थना सभा किया करते थे जिनमें सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग शामिल होने के लिए स्वतंत्र थे। ऐसी ही एक प्रार्थना सभा में 30 जून 1948 को नाथूराम गोड्से ने उनकी हत्या कर दी। वह "हे राम " शब्द का उच्चारण करते हए जमीन पर गिर पड़े थे। इस तरह अहिंसा का प्रचाकर हिंसा का षिकार हो गया। गांधी की जिंदगी और उनकी षिक्षाओं ने बहुतों को प्रभावित किया जो गांधी को अपना मार्गदर्षक बताते हैं अथवा जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी गांधी के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दी। गांधी की पहली जीवनी "गांधी ए पैट्रियर इन साउथ अफ्रीका 1905 में लंदन इंडियन क्रानिकल में जब प्रकाषित हुई थी उस समय गांधी अधिक चर्चित शख्सियत नहीं थे। यह जीवनी जोसफ जे. ड्रोक ने लिखी थी। यूरोप में सबसे पहले रोमा रोला ने 1924 में प्रकाषित अपनी पुस्तक 'महात्मा गांधी के जरिए गांधी के बारे में चर्चा की थी। ब्राजील की अराजकतावादी नारीवादी लेखिका मारिया लासेर्दा दि मूरा ने भी शांतिवाद संबंधी अपने लेखन में गांधी का उल्लेख किया था। कई जीवनी लेखकों ने गांधी के जीवन का विवरण देने की भी कोषिष की। इनमें डी. जी. तेंदुलकर की आठ खंडों में प्रकाषित "महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचंद गांधी" तथा प्यारेलाल और सुषीला नायर की दस खंडों में प्रकाषित 'महात्मा गांधी पुस्तकें शामिल हैं।

गांधी कदम-दर-कदम उस ऊंचाई तक पहुंचे जहां पहले कोई भी नहीं पहुंच सका था। अपने जीवन काल में करोड़ों लोगों को प्रेरित करने वाले गांधी आज भी दुनिया भर में लोगों की प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। उनके विचार अमर और समय-सिद्ध हैं तथा उन्हें आम आदमी की समझ में आ सकने लायक सरल - सहल भाषा में लिखा गया है। वह आम इंसानों के बीच बहुत बड़ी शख्सियत के रूप में उभरकर सामने आये और उन्होंने लाखों लोगों को राजनीतिक, सामाजिक और मानवीय स्वतंत्रता के प्रति जागरूक बनाया। उन्होंने इन लोगों को गलत कार्यों के खिलाफ आवाज बुलंद करने के लिए 'अधिकारों के अहिंसक व्यवहार का तरीका बताकर व्यावहारिक रास्ता भी सुझाया। [7]

सारांश

संक्षेप में कहा जाए तो गांधी सच्चाई से सच्चाई तक का सफर तय कर रहे थे। और विष्व इतिहास के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने परिवर्तन के लिए अहिंसा की संस्कृति से अवगत कराया। हमने गांधी के साथ ही अपने सम्मान और स्वाभिमान को भी दफन कर दिया गया है। अब गांधीवाद के मूलभूत सिद्धांतों और तत्वों को अपनाने का समय आ गया है। गांधीवादी सिद्धांत सभी धार्मिक विचारों का निचोड़ हैं और ये मानव केन्द्रित दृष्टिकोण के लिए अनिवार्य भी हैं।

संदर्भ सूची

१. जूडिथ एम ब्राउन, गांधी प्रिजनर ऑफ होप, दिल्ली, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९९०, पृष्ठ २३१
२. प्रा विश्वनाथ टंडन, गांधीजी एव सत्याग्रह, सर्व सेवासंघ राजघाट १९९९ पृष्ठ १८७
३. एन आर राघवन, द मोरल अंड पोलीतीकॅल थॉट ऑफ महात्मा गांधी, दिल्ली आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी सन १९९८ पृष्ठ ३५६
४. डॉ ताराचंद, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास, सूचना और प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली सन २००१ पृष्ठ १२९
५. डॉ ए जी थोरात, आधुनिक भारत का इतिहास, प्रशांत प्रकाशन जळगाव सन २००३ पृष्ठ १७५

६. लुई फिशर, गांधी और सत्याग्रह साहित्य प्रकाशन, मंडळ दिल्ली सन २००५ पृष्ठ ८९
७. डॉ सोमनाथ रोडे, आधुनिक भारताचा इतिहास, कल्पना प्रकाशन नांदेड सन २००७ पृष्ठ १६४